योगासन / प्राणायाम

प्राणायाम :

बैठकर किये जाने वाले आसन :

प्रजनन/इन्फर्टीलिटी के लिए आसन

पीठ के बल तथा बैठकर किये जाने वाले आसन

योग-प्राणायाम निर्देश

परम पूज्य स्वामी जी महाराज द्वारा निर्देशित प्राणायाम एवं आसनों का अभ्यास, जिसकी विधि एवं सावधानियों को ध्यान में रखते हुए योगाचार्य के निर्देशन में करें।

Gynaecological Diseases / स्त्री रोग

विद्वानों की दृष्टि में 'यज्ञ'

- यज्ञ की अग्नि पदार्थों को सूक्ष्म कर देती है, सूक्ष्मीकरण से पदार्थ की शक्ति असंख्य गुना बढ़ जाती है एवं औषधि का वह शक्तिशाली अंश उभर आता है जिसे कारणतत्व कहते हैं। स्थूल औषध की तुलना में सूक्ष्म की सामर्थ्य का अनुपात अत्यधिक बढ़ा चढ़ा होता है।

  -(हनीमैन के अनुसार)

- अनाहत चक्र (Cardiac Plexus) पर अग्निहोत्र (यज्ञ) के प्रभावों का अध्ययन किया है। यज्ञ के बाद की स्थिति वैसी ही पाई जाती है जैसी कि मानसिक या आध्यात्मिक उपचार के बाद होती है।

  -(डॉ. हिरोशी मोटोयामा)

- मैंने 25 वर्ष के खोज और परीक्षण से क्षय रोग का 'यज्ञ' चिकित्सा से सफल उपचार किया हूँ तथा उनमें ऐसे भी रोगीं थे, जिनके क्षत (Cavity) कई-कई इंच लंबे थे और जिनको वर्षों सैनिटोरियम और पहाड़ पर रहने पर भी अंत में डॉक्टरों ने असाध्य बता दिया, पर वे भी यज्ञ चिकित्सा से पूर्ण निरोग होकर अब अपना कारोबार कर रहे हैं।

  -(फुंदनलाल अग्निहोत्री)

- जब यज्ञ किया जाता है तो वातावरण में प्राण ऊर्जा के स्तर में वृद्धि होती है जो कि प्रयोगों में यज्ञ से पहले और बाद में मानव हाथों की किर्लियन तस्वीरों की मदद से भी दर्ज किया गया था।

  -(जर्मन डॉ. माथियास फरिंजर)

यज्ञ महिमा, पतंजलि योगपीठ

से जुड़ने हेतु सोशल मीडिया

www.facebook.com/swamiyagyadev	www.facebook.com/स्वामी विप्रदेव
twitter.com/@swamiyagyadev	twitter.com/@SVipradev
www.youtube.com/user/Swamiyagyadev	
https://instagram.com/Swamiyagyadev	

Vedic 4:00 A.M. to 5:00 A.M. & 11:30 A.M. to 11:55 AM / 11:30 P.M. to 11:55 P.M. (प्रतिदिन अग्निहोत्र कार्यक्रम देखें।)

अग्निहोत्र संजीवनी 5:00 A.M. to 6:00 A.M. (प्रतिदिन अग्निहोत्र कार्यक्रम देखें।)

E-mail ID : yajyavijyaanam@patanjaliyogpeeth.org.in Mobile & Whatsapp No. : 9068565306, 9890977399

यज्ञ एवं योग साधना केन्द्र

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽअसि। परमेण धाम्ना दृंहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्॥ -(यजु. 1.2)

अर्थात् : हे विद्यायुक्त मनुष्य! तू जो यज्ञ शुद्धि का हेतु है। जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु और सूर्य की किरणों में स्थिर होने वाला, वायु के साथ देश-देशान्तरों में फैलने वाला, वायु को शुद्ध करने वाला व संसार का धारण करने वाला तथा जो उत्तम स्थान से सुख का बढ़ाने वाला है। इस यज्ञ का तू मत त्याग कर तथा तेरा यज्ञ की रक्षा करने वाला यजमान भी उस को न त्यागे ।

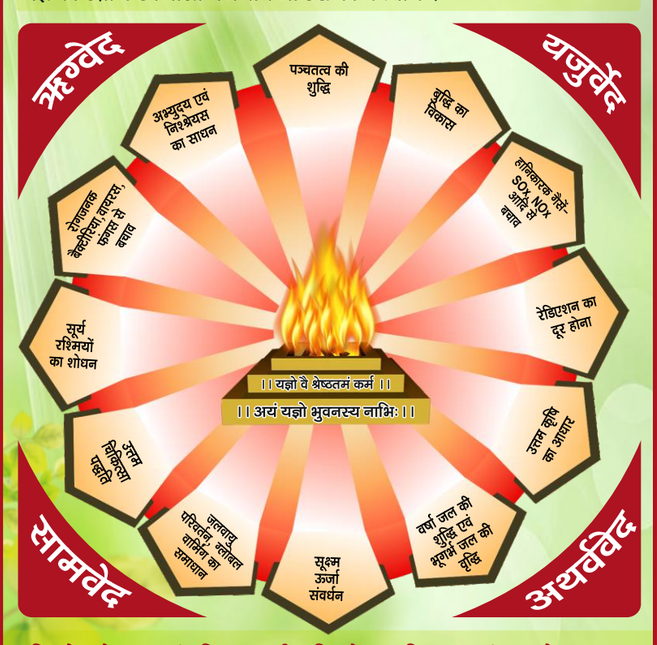

अग्निहोत्र से वायु एवं वृष्टि जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास, स्पर्श, खान-पान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना, इसीलिये इस को देवयज्ञ कहते हैं। (स०प्र० चतुर्थसमुल्लास) -महर्षि दयानंद सरस्वती।

यज्ञ चिकित्सा

पतंजलि आयुर्वेद का विशिष्ट उत्पाद

गर्भधा

(हवन सामग्री)

500 g

स्वास्थ्य-साधना का आधार

भारत में निर्मित
MADE IN BHARAT

Store in cool & Dry Place.
Keep away from direct sunlight.
After opening transfer the content in an airtight container.

Mfd. By:
Divya Pharmacy
For mfg. Unit address, read the first character (s) of the Batch Code #.
A) A-1, Industrial Area, Haridwar-249401, Uttarakhand, INDIA
B) Unit-II, Khasra No. 210, 211, Patanjali Food & Herbal Park Laksar Road, Padartha, Haridwar-249404, Uttarakhand, INDIA
For Feedback and complaints write to :
The Consumer Care Manager, Divya Pharmacy,
A-1, Industrial Area, Haridwar-249401, Uttarakhand.
E-mail : customercare@divyapharmacy.org
Customer Care Toll Free No. : 18001804055
जानकारी हेतु सम्पर्क करें:- yajyavijyaanam@gmail.com

8904049100726

Images are for representation purpose only

आयुर्वेदेषु यत्रोक्तं यस्य रोगस्य भेषजम् ।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं तेन तेनैव होमयेत् ।।
-(आयुर्वेद)

अर्थात्- आयुर्वेद में जिन रोगों के शमन के लिए जिन औषधियों का विधान है, उन-उन रोगोंके शमन के लिए उन्हीं औषधियों से हवन करें।

प्रयोग विधि- प्रतिदिन सुबह-शाम प्रस्तुत हवन सामग्री से रोग की अवस्थानुसार 21, 51 या 108 आहुतियां मंत्रोच्चारण पूर्वक प्रदान करें। प्रत्येक आहुति में 2 से 3 ग्राम गोघृत के साथ उसी अनुपात में सामग्री की भी आहुति दें।

कक्ष में हवन करते समय खिड़की-दरवाजे खुले रखें तथा हवन के पश्चात् शांत-अग्नि के अंगारों पर प्रस्तुत जड़ी-बूटियों व गुग्गुल आदि द्रव्यों को रखें और उठ रही मंद सी धूनी वाले वायुमण्डल में रोगानुसार योगाभ्यास करें।

पुत्रजीवक, नागकेशर, कायफल, शरपुंखा, जटामांसी, वच, अनन्तमूल, मिश्री, अपामार्ग, शिवलिंगी बीज से निर्मित गर्भधा (हवन सामग्री), जो वन्ध्यत्वरोधी एवं गर्भपुष्टि के लिए उपयोगी तथा जिससे वातावरण जीवनीय शक्ति से युक्त, सुगन्धित, स्वच्छ एवं शान्तिदायक बनता है।

Garbhda (Havan Samagri) used as anti infertility and healthy foetus and maintain vitality,good smelling, peacefulness, health and hygiene of atmosphere.

यज्ञ के भस्म का सेवन

सभी प्रकार के रोगों में यज्ञ शेष भस्म को छानकर प्रति 1 लीटर पानी में 2 ग्राम से 5 ग्राम की मात्रा में कपड़े की पोटली बनाकर जल पात्र में रखकर 8 घंटे के बाद यही पानी पियें। इसी जल मे सोंठ का प्रयोग भी अत्यंत लाभदायक है। सामान्य व्यक्ति भी स्वास्थ्य लाभ हेतु इस पानी को पी सकते है।

आयुर्वेदिक उपचार

- दिव्य प्रवाल पिष्टी, दिव्य मुक्ता पिष्टी, दिव्य धत्री लौह, दिव्य अभ्रक भस्म, दिव्य अमृता सत्, दिव्य सोम घृत, दिव्य फल घृत, दिव्य स्त्री रसायन वटी, दिव्य चन्द्रप्रभा वटी।
- शिवलिंगी बीज, पुत्रजीवक बीज।

पथ्य-आहार

- गेहूँ, मूँग की दाल (छिलके वाली), लौकी, तोरई, कच्चा पपीता, गाजर, टिण्डे, पत्तागोभी, करेला, परवल, पालक, हरी मेथी, अंकुरित अन्न, सहिजन की फली, चना, हरी मिर्च व अदरक (अल्प मात्रा में), गाय का दूध व घृत सर्वोत्तम है।
- फलों में सेब, पपीता, चीकू, अनार, अमरूद, जामुन, मौसमी आदि फलों का प्रयोग सामान्यतः किया जा सकता है। सूखे मेवों में काजू, बादाम, मुनक्का, किशमिश, अंजीर, चिलगोजा, छुहारे, खजूर आदि का प्रयोग करें।

अपथ्य-आहार

- अधिक नमक, तैल, खटाई वाले पदार्थ, गरम मसाला, अचार, चावल, उड़द, राजमा, आधुनिक व्यंजन, कटहल, आलू, जिमीकन्द, रतालू, बेसन, मैदा से बने पदार्थ।
- चाय, कॉफी, कोल्डड्रिंक्स, आइसक्रीम, पिज्जा, बर्गर, पैटीज, इडली, डोसा, तम्बाकू, गुटखा, पान-मसाला, माँस-मदिरा, अण्डे व मैदे से बने ब्रेड आदि कन्फैक्शनरी व सिन्थेटिक फूड्स आदि अहितकर, अभक्ष्य व त्याज्य पदार्थों का सेवन कदापि न करें।

घरेलू उपचार

- नारियल की दाढ़ी (भूरे रेशे) को जलाकर राख बनाकर छानकर रख लें। 3-3 ग्राम नारियल की यह भस्म सुबह-दोपहर खाली पेट छाछ से, सायं गुनगुने जल के साथ सेवन करें, जो मासिकधर्म में अति रक्तस्राव तथा श्वेतप्रदर में लाभप्रद है।
- वमन (उल्टी), हैजा व हिचकी में इस भस्म को 1-1 ग्राम की मात्रा में थोड़े जल के साथ सेवन करने से विशेष लाभ होता है।
- बकायन के बीजों का चूर्ण बनाकर प्रातः छाछ के साथ तथा सायं जल के साथ सेवन करने से रक्तस्राव में लाभ होता है।
- नागदोन के 4-5 पत्तों को चबाकर खाने से अति मासिक स्राव में लाभ होता है।
- शीशम के पत्ते 8-10 व मिश्री 25 ग्राम दोनों को मिलाकर घोट-पीस कर प्रातःकाल सेवन करें। कुछ ही दिनों के सेवन से स्त्रियों के श्वेत प्रदर तथा पुरुषों के प्रमेह आदि रोगों में निश्चित लाभ होता है। मासिकधर्म के अन्तर्गत होने वाला अतिरिक्तस्राव सामान्य हो जाता है। सर्दियों के मौसम में उक्त दवा में 4-5 काली मिर्च मिलाकर सेवन करना चाहिए। यह अत्यन्त शीतल है। अतः गर्मी से होने वाले रक्तस्राव में भी अत्यन्त लाभप्रद, निरापद एवं सरल प्रयोग है।

नोट : मधुमेह के रोगी मिश्री के बिना ही प्रयोग करें।

- 20 ग्राम आंवले का रस शहद में मिलाकर 30 दिन तक पीने से श्वेत प्रदर में आराम मिलता है।

प्राकृतिक चिकित्सा

- श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, गर्भाशय की गांठ, अतिमासिक स्राव, मासिक विकार, गर्भपात या गर्भस्राव आदि में मिट्टी की पट्टी, मालिश, नीम के पानी का एनिमा, कटिस्नान, वाष्पस्नान, रसाहार, शोधक तथा पोषक-आहार का सेवन करने से लाभ होता है।

सुगंध-मिष्ठ-पुष्टिवर्धक, है रोगनाशक चार जिसमें हवि।
ऐसे दिव्य तेज पुंज को, कहते अग्निहोत्र जिसे कवि।।